

## भारत-यूनाइटेड कगिडम: प्रौद्योगिकी क्षेत्र सहयोग

यह एडिटरियल 14/12/2021 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित "Delhi To London" लेख पर आधारित है। इसमें भारत के लिये प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में यूनाइटेड कगिडम के साथ सहयोग में नहिती अवसरों के संबंध में चर्चा की गई है।

### संदर्भ

जब भी भारत प्रमुख शक्तियों के साथ प्रौद्योगिकीय सहयोग के बारे में सोचता है तो वह आमतौर पर अमेरिका, यूरोपीय संघ और जापान को संदर्भित करता है। रक्षा प्रौद्योगिकियों में रूस को भी एक प्रमुख शक्तिमाना जाता है।

बीते कुछ समय में चीन का उभार भी प्रमुख प्रौद्योगिकीय शक्ति के रूप में हुआ है, हालाँकि उसकी विस्तारवादी नीतियों के कारण भारत के साथ उसके अनुकूल संबंध नहीं हैं।

कति भारत की प्रौद्योगिकीय परकिल्पना में यूनाइटेड कगिडम एक 'मसिगि लकि' की तरह है, जो औद्योगिकीकरण की राह पर जाने वाले विश्व का पहले राष्ट्र होने और वैज्ञानिक अनुसंधान एवं तकनीकी विकास की एक लंबी परंपरा रखने के बावजूद भारत के लिये प्रौद्योगिकीय सहयोग हेतु शीर्ष प्राथमिकताओं में शामिल नहीं है।

### भारत, यूनाइटेड कगिडम और प्रौद्योगिकी

- **ग्लोबल इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी रैंकिंग में यूनाइटेड कगिडम:** लंदन, ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज जैसे शीर्ष रैंकिंग वाले विश्वविद्यालयों के साथ ब्रिटन दुनिया की शीर्ष प्रौद्योगिकी शक्तियों में से एक है।
  - हार्वर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा वर्ष 2020 में जारी 'वर्ल्ड साइबर पावर इंडेक्स' में वह चीन के पीछे लेकिन रूस से आगे तीसरे स्थान पर था, जबकि भारत इस सूचकांक में 21वें स्थान पर था।
  - वर्ष 2021 में '**वैश्विक बौद्धिक संपदा संगठन**' (WIPO) ने वैश्विक नवाचार सूचकांक (Global Innovation Index) में ब्रिटन को चौथा स्थान दिया था, जबकि इस रैंकिंग में भारत 46वें स्थान के साथ बहुत पीछे रहा।
- **अन्य क्षेत्रों में ब्रिटन का प्रभाव:** भारत के वंदिश मंत्री ने कई बार दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में ब्रिटन के लगातार बने हुए महत्त्व को रेखांकित किया है।
  - यूनाइटेड कगिडम, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य, एक प्रमुख वित्तीय केंद्र और उच्च शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी का एक प्रमुख केंद्र है।
  - यह वैश्विक समुद्री पहुँच और दुनिया भर में राजनीतिक प्रभाव भी रखता है।
- **यूनाइटेड कगिडम की साइबर रणनीति, 2022:** 'प्रतिसिपर्द्धी युग में वैश्विक ब्रिटन: सुरक्षा, रक्षा, विकास और वंदिश नीतिकी एकीकृत समीक्षा' (Global Britain in a Competitive Age: An Integrated Review of Security, Defence, Development, and Foreign Policy) नाम लंदन में प्रकाशित रिपोर्ट एक नई प्रौद्योगिकीय क्रांति को साकार करने की दशा में ब्रिटन की प्रतबिद्धता को प्रकट करती है।
  - वर्ष 2022 में ब्रिटन द्वारा एक नई साइबर रणनीतिकी घोषणा भी अपेक्षित है। इन पहलों में शामिल कुछ प्रमुख विषय या थीम हैं:
    - ब्रिटन में क्षेत्रीय और सामाजिक असमानताओं को दूर करने के लिये प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना।
    - एक प्रमुख वैज्ञानिक शक्ति के रूप में ब्रिटन की वैश्विक स्थिति सुनिश्चित करना।
    - ब्रिटन के भविष्य के आर्थिक विकास के संचालन के लिये तकनीकी नवाचार पर ध्यान देना।
    - नए तकनीकी खतरों के वरिद्ध आंतरिक सुरक्षा लचीलेपन का निर्माण करना।
    - नई तकनीकों की मदद से खुफिया तंत्र का आधुनिकीकरण करना।
    - राष्ट्रीय रक्षा रणनीति में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करना क्योंकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) जैसी नई क्षमताएँ भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण बन गई हैं, जतिने युद्ध-टैंक, जहाज़ और लड़ाकू जेट जैसे सैन्य हार्डवेयर।
    - अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में द्वेषपूर्ण अभिक्रियाओं का मुकाबला करने के लिये प्रौद्योगिकीय शक्तिका प्रसार करना।
- **भारत-यूनाइटेड कगिडम संबंध में वंदिद्यमान समस्याएँ:**
  - **भारत-यूनाइटेड कगिडम के मध्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नमिन सहयोग:** यद्यपिमाना जाता है कदिल्ली और लंदन के बीच जल्द ही एक व्यापार समझौता संपन्न होना तय है, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नहिती अत्यधिक संभावनाओं के बावजूद इस दशा में अधिक प्रयास नहीं

किया गया है।

- अपेक्षा है कि दिसंबर, 2021 में आहूत कार्नेगी इंडिया के 'ग्लोबल टेक्नोलॉजी समिटि' में प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में साझेदारी की कुछ संभावनाओं पर प्रकाश पड़ सकेगा।
- **संबंध का 'पाकस्तान दृष्टिकोण':** भारत के साथ ब्रिटन के संबंध कभी भी उतने आशाजनक नहीं दखि जतिने अभी हैं, बल्कि द्विपक्षीय संबंधों पर लोकप्रिय आख्यान सदैव अतीत में ही उलझा हुआ रहा है।
  - दिल्ली का वदेश नीति तबका लंदन को देखने में कभी भी पाकस्तान के दृष्टिकोण को अलग नहीं कर सका है।
  - लंदन द्वारा पाकस्तान की पैरवी करना हमेशा से दिल्ली के लिये चिंता का विषय रहा है।
- **औपनिवेशिक दृष्टिकोण:** भारत-यूनाइटेड किंगडम संबंधों की सीमितता का एक कारण औपनिवेशिक दृष्टिकोण भी रहा है, जसिने पारस्परिक धारणाओं को विकृत किया है।
  - भारतीय राजनीतिक और नौकरशाह वर्गों के बीच ब्रिटन के वरिद्ध उपनिवेशवाद-विरुधी रोष कभी भी छुपा हुआ नहीं रह सका है।
  - स्वयं ब्रिटन के लिये भारत के प्रति अपने पूर्वाग्रहों को दूर करना कठिन ही रहा है।

## आगे की राह

- **मौजूदा मतभेदों से आगे बढ़ना:** भारत अपने औपनिवेशिक अनुभवों से बाहर निकल चुका है और अब ब्रिटन के साथ एक पूरव शासक के बजाय बराबरी का व्यवहार करता है। भारत अगले एक-दो वर्ष में जीडीपी रैंकिंग में ब्रिटन से आगे निकलने के लिये भी तैयार है।
  - लंदन की दक्षिण एशियाई नीति पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, दिल्ली अब पाकस्तान के साथ भारत के राजनीतिक विवादों में एक विशेष भूमिका रखने के उसके दावों की अनदेखी कर सकती है।
  - इसके साथ ही, दिल्ली को ब्रिटन के साथ व्यापक रणनीतिक संभावनाओं को चिह्नित करना चाहिये और इस दिशा में सहयोग के लिये अपनी राजनीतिक पूंजी का निवेश करना चाहिये।
- **यूनाइटेड किंगडम की महत्त्वाकांक्षी नीतियाँ भारत के लिये एक अवसर:** लंदन प्रौद्योगिकी की वैश्विक व्यवस्था को फरि से आकार देने के लिये समान विचारधारा वाले देशों का गठबंधन बनाने की इच्छा रखता है।
  - इसमें 'एंग्लोस्फीयर'—अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के पारंपरिक रूप से करीबी भागीदारों के साथ-साथ जापान और भारत जैसे अन्य भागीदारों के साथ प्रौद्योगिकीय संबंधों को सशक्त करना शामिल है।
  - ब्रिटिश नीति के ये सभी तत्व अर्थव्यवस्था, राजनीति और सुरक्षा के क्षेत्र में भारत के अपने हितों के साथ संबद्ध हैं।
    - यूनाइटेड किंगडम की प्रौद्योगिकी पहले 'क्वाड' के प्रौद्योगिकीय एजेंडे के भी अनुरूप हैं।
  - ये सभी अवसर भारत को यूनाइटेड किंगडम के साथ सहयोग करने के पर्याप्त कारण प्रदान करते हैं।
- **दिल्ली और लंदन के एक-दूसरे के प्रति बदलते दृष्टिकोण:** पाकस्तान के लगातार सापेक्षिक पतन (जहाँ इसकी अर्थव्यवस्था अब भारत के दसवें हिस्से के बराबर रह गई है) और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ भारत की गहरी होती रणनीतिक साझेदारी के साथ ब्रिटन भारतीय उपमहाद्वीप के प्रति अपने अतीत के दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करने हेतु प्रेरित हो रहा है।
  - अमेरिका, सऊदी अरब और यूई की दक्षिण एशिया नीतियों में "इंडिया फ्रंट" को महत्त्व दिलाने में अपनी कूटनीतिक सफलता के साथ भारत को विश्वास है कि यूनाइटेड किंगडम के दृष्टिकोण को भी बदला जा सकता है।
- **वभिन्न क्षेत्रों में सहायता की पेशकश:** भारत 21वीं सदी की महाशक्ति के रूप में उभर रहा है और नकिट भविष्य में विश्व की सबसे बड़ी प्रभावकारी शक्तियों में से एक बनने की राह पर है।
  - यह वैश्विक दौड़ में नए भागीदारों की तलाश कर रहा है जो यूनाइटेड किंगडम के लिये एक बड़ा अवसर प्रदान करता है। यूनाइटेड किंगडम शिक्षा, अनुसंधान, नागरिक समाज और रचनात्मक क्षेत्र में भारत के लिये व्यापक पेशकश कर सकता है।
  - इसके अलावा, भारत का कुशल श्रम, तकनीकी सहयोग और जीवंत बाज़ार ब्रिटन के लिये भी बहुत से अवसरों के द्वार खोलता है।
    - इस संदर्भ में, भारत को ब्रिटन से एक ऐसी पहल की आवश्यकता है जो ब्रिटन में भारतीय आईटी पेशेवरों और कुशल कार्यबल को काम करने की अनुमति प्रदान करे।

## निष्कर्ष

- दिल्ली के लिये लंदन के साथ नया गठबंधन चार क्षेत्रों में लाभ लेकर आया— घरेलू समृद्धि का सृजन, राष्ट्रीय सुरक्षा की वृद्धि, वैश्विक प्रौद्योगिकी पदानुक्रम में ऊपर बढ़ना और एक स्वतंत्र, खुले एवं लोकतांत्रिक वैश्विक प्रौद्योगिकीय व्यवस्था के निर्माण में योगदान।
- यूनाइटेड किंगडम की आगामी साइबर रणनीति 2022 भी प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारत को सहयोग के लिये अवसर प्रदान कर सकती है।

**अभ्यास प्रश्न:** यद्यपि माना जाता है कि दिल्ली और लंदन के बीच जल्द ही एक व्यापार समझौता संपन्न होना तय है, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नहिति अत्यधिक संभावनाओं के बावजूद इस दिशा में अधिक प्रयास नहीं किया गया है। टपिपणी कीजिये।